

विद्याधर-कथा

17065
23-8-15



लेखक

रा.देवदत्त का

निवास रिवरबै कोलाहरी, उदना

100

संकाशक

श्री अमरनाथ का

प्रा. खुमार, पो. निर्मली,

जिला. सुदामा

विद्यावर-कथा

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय



लेखक

राजेश्वर का

विद्वत् रिम्वं लीगवटी, पटना

17045
23.8.15



प्रकाशक

श्री अमरनाथ का

श्री. लुम्हार, पो. निर्मली,

जिला. लखनौ

सर्वविधकारी कुपरिचय

दाम दू हाका

द्वय
श्री कामेश्वर मल्ल
कालिका प्रेस,
आर्यकुमार रोड, गटना-४

समर्पण

कनकरेखा सदृश दिव्य कन्या ॐ श्रावणमास
अष्टमि तिथि शुक्ल पक्ष अष्टमि तिथि
आषाढ मास पक्ष अष्टमि तिथि
वत्सागमन करीव हुनकरि है दिव्य-कन्या
समर्पण करुत जोइव ।

—राजेश्वर भट्ट

प्राक्कथन

संस्कृत कथा के सुकाल भारतीय दर्प में प्रायः सम्प्रसाद सम्पत्ति मिले। ऋग्वेद के कतिपय मूल एतेन पाषाण आइस आदि में बूढ़ या तीन पाषाण मध्य परस्पर कथनोपकथनक समा-
 केन कएल गेल अछि। एहि मूल के संवादमूलक कहल जाइत। भारतीय साहित्यक
 कतिपय अंगक उद्गम एहि संवादमूलक सँ भेल अछि। सामान्य स्तुतिपरक मूलक
 में भिन्न-भिन्न देवताक उद्गम में सर्वोत्तमक तथा शिक्षाप्रद आख्यायक उपलब्धि पाषाण
 आइस। उद्दिष्टा मध्य आदि कथाक सुकाल पाषाण आइस जोकर विस्तृत
 कथन बृहद्देवता में तथा पदपुरुषिण्यक 'आख्यायन सर्वानुत्तममौक' नेदार्थोपिकाक
 टीका मध्य कएल गेल अछि। प्राक्कथनक में तथा उद्गमक अंगन माध्य में एहि
 कथाक कथ एते पाषाण आचार के प्रदर्शित करवाक प्रयत्न कएलैन्ह अछि। अतः ऐति-
 हानिक बुद्धिकोषे विस्तृत कएल पर देव के कथाक मूल स्रोत मानल अचित्त पत्तील
 होइत। अतएव ब्राह्मण मध्यक विधि एवं सर्वोत्तमक विस्तृत विन्यास सँ उद्दिष्ट तथा
 उपनिषदक कठोर साधनिक मध्यक विस्तृत मध्य में क्लान्त वैदिक श्रुति के प्रायः मान-
 निक अथा के हरि हृदय के प्राप्त भी योतल कथेबाबे सरल कथाक आनन्दकता बूझि
 पड़ैत। अतएवक "दुष्टता को उन्नीत", "वेदादि को सन्तानु", "अनन्य को सुकम्पा"
 इत्यादि कथे वैदिक साहित्य में सरल कथाक समावेश कएल गेल।

वैदिक कथा कालकर्म परिष्कृत भी परिवर्धित भए परवर्ती साहित्य में उद्भूत
 भेल आदि सँ ऋग्वेदक कतिपय कथा पञ्चायन, महाभारत एवं पुराण में पाषाण
 आइस। पाषाण आसक कथा साहित्य में आसक-कथा के लक्ष्य सँ पाषाण एवं
 सकलितता देव मानल जाइत बूझा एहि में चलेक एहनी कथा अछि के अन्यान्य मूल सँ
 पूर्वक भिन्न। आख्यायन साहित्यक अनुसंधान प्रसिद्ध अनेक विद्वान् डा० हर्टेल सहोदय
 अंगन अनुसंधानक द्वारा सिद्ध कएल के चरित्रक मूल मध्य 'तन्त्राकथनिका' नाम आदि
 सँ सम्बद्ध तीन कथासंग्रह अछि। डा० हर्टेल सहोदयक अनुसार आसकक आधार
 साक्षात्स्रोत ब्राह्मण आख्यायन भिन्न। अतएव एहि आख्यायन के अनुसंधानक मध्य कथ में
 परिवर्धित कएल। अतएवक मूल आख्यायन में विनयता आएल। डा० हर्टेल 'बृहन्-
 कथा' तथा 'तन्त्राकथनिका' के चरित्रक परिलक्षित रूप मानैत अछि।

पञ्चतन्त्रक सर्व अंगन अनुसार सौन्दर्य (१९११ ई०) बहुलभी भाषा में कथोपकथन
 अकर अनुसार गिरिक, अरेबिक, लैटिन तथा युरोपक समस्त भाषा में भेल आदि सँ
 पञ्चतन्त्रक कथा 'विपरीत कथा' भाषे युरोप में अद्यावधि पाषाण आइस।

सातवाहन मरेसक सभाकवि गुणभट्ट वैद्याजी भाषा में बृहत्कथा नामक एक
 गोट विराट कथा अनुसंधानक निर्माण कएलैन्ह अकर अलोचिकता एवं सरलताक
 प्रकाशित दूर-दूर देस तक प्रसारित भेल। गुणभट्टक प्रतिष्ठाक उद्गम में श्रीमद्भागवत
 कथन मध्य 'आत्मविष्णुपत्नी' में कहैत अछि—

अतिदीर्घजीविहीनार्थ अस्मिन् कथोपकथनं ब्रह्म।

कैनीश्वेत गुणभट्टः स एव अस्मात्संवाचनः च

के पुत्रादयः भगवान्तरावन्त इत्यादि ज्ञेयाः । संस्कृत साहित्य में पुत्रादयः कतिपया वाक्योक्ति भी व्यावहारिक वस्तु न समझी ।

पुत्रादयः बहुवचनका ही एहि समय दुर्लभाः अस्ति मुदा इन्दीक 'काम्यावर्त', 'कुम्भपुत्र' 'बालवदन्ता', 'बावक' 'हर्ष-चरित' आदि ग्रन्थ में एहि कालक उत्प्रेष्य वाच्योक्त कारणः । विदितममष्ट मलवम्बु मे—वस्तुतः पुत्रादयेन निमित्तो रक्षितो जनः । आदि रूप में एकर प्रयोग कर्तव्यम् अस्ति । बहुवचनका हीन संस्कृत अनुदात्त—(१) सुदन्वापी कृत 'बहुवचनकादौकसंयुक्त', (२) अंगेर कृत 'बहुवचनकादौकसी' तथा (३) सोमदेव कृत 'अन्तर्निर्वाण' बहुवचन प्रयोग वाच्योक्त कारणः ।

सुदन्वापीक बहुवचनकादौकसंयुक्त अर्थ सावहि उपमन्व वाच्योक्त कारणः साहि में केवल काम्यावर्त के बह्वचनकादौकसंयुक्त के बाह्य लक्षणान् तथा असंस्कृत वर्णन ही व्यापक सादृशक प्रयोग कर्तव्य वेत्त अस्ति । बहुवचनकादौकसंयुक्त २८ वर्णक अनुवर्त प्रत्यक्षिक । एहि ग्रन्थक कर्ता सुदन्वापी ईशाक चौधम सुदन्वापीक लक्षणान् अथवा इन्दीक निमित्त कर्तुं पुत्रादयः अर्थ पुत्रक संस्कृतिक गति में भी बहुवचनका के वाच्योक्त उपमन्व कर्तव्यम् । एहि ग्रन्थ मध्य सरवाहनदत्तक विद्याहृदय विद्याहृ में ही बहुवचन ६ विद्याहृदय उत्प्रेष्य वाच्योक्त कारणः । कर्ताक प्रारम्भ में उक्त-विनीक वर्णना तथा कौतुक वाच्यक महत्वेन कौतुकक पुत्रु एवं विद्याहृदय भेदा ही लक्षणान् वाच्योक्त में कर्तव्य हुनक पुत्र गीतान्क द्वारा विद्याहृदयक प्रयोग तथा लक्षणान् पुनः अन्ता वाच्यक द्वारा प्रयोग बहुवचन वाच्योक्त द्वारा प्रयोग इत्यादि कारणा पर गीतान्कक पुत्र कर्तव्योक्त द्वारा विद्याहृदय पर वाच्योक्त प्रयोग में उत्प्रेष्य वाच्योक्त कारणः । अनुवर्तक सुदन्वापीक हीन हुनक प्रेमकथा तथा वाच्योक्त हीन में सरवाहनदत्तक प्रेमकथा कर्तव्य प्रत्यक्षिक अस्ति ।

सुदन्वापीक प्रमाण बहुवचनका एक प्राकृत संस्करण हीन परम्परा में संवत्स-मणि अनुदेव द्वितीयक नाम ही निमित्त कर्तव्यम् । यद्यपि एहि ग्रन्थ में भी बहुवचनके के वाच्योक्त वर्णनान् पुत्रा इत्यादि कथा एवं वर्णन में पूर्ण परिवर्तन कर्तव्यम् । अतः बहुवचनका लौकिक काय-कथा अथ कौतुक संवत्सम अनुदेव द्वितीय के कर्तव्य कथाक कर्तव्य तथा हीन वर्णक प्रमाण केनद्वारा कतिपय प्रमाण के एहि में उपमन्व लक्षणान् कर्तव्यम् । अतः हीन वाच्योक्त बहुवचनक परिवर्तन कथाक वाच्योक्त के कर्तव्य में वाच्योक्त कारणः । ईशापी बहुवचनका में वाच्योक्त उत्प्रेष्य पुत्र सरवाहनदत्तक विद्याहृदय कथा अस्ति, किन्तु संवत्सम कर्तव्यक सुविमर्शक अस्ति पुत्र अनुदेव के लक्षणान् वाच्योक्त कर्तव्यम् । अनुदेव द्वितीय २९ लक्षणक एवं लक्षणान् ११ ह्यार वर्णोक्त प्राकृत वाच्योक्त मध्य लौकिक वाच्योक्त । द्वितीय कर्तव्यक अर्थ परिवर्तन वा परिवर्तन होइत ।

कर्ताक वाच्योक्त मने किन्तो होइत पुत्रा बहुवचनका प्रस्ताति साविदात्तक पुत्र में लौकिक लक्षण के वाच्योक्त कर्तव्यक उत्प्रेष्य कथा बहुवचनका हीन कर्तव्य ज्ञेयाः । सुदन्व हीन लक्षणान् कथा केवल वाच्योक्त एवं उत्प्रेष्य प्रेम-कथा लक्षण लौकिक लक्षण कर्तव्य सरवाहनदत्तक कतिपय विद्याहृदय कथाक लक्षणान् मने लक्षणान् पुत्र बहुवचनका कर्तव्य कथा-कथा वा पुत्र-कथा केही लक्षण । सरवाहनदत्तक प्रेम-कथाक लक्षण कर्तव्य कर्तव्य कर्तव्य ज्ञेयाः । कौतुक हुनक कथाक प्रेमकथा विद्याहृदय कर्तव्य होइत

काल : मैत्रा ल्यापाटी वन सर्वेन कए लहुसब बुद्ध जावक जएवा पर बिहू बाबी
बनैत जहि बोझि सरहै" मरवाहनदसक करिब मे डीपाम्बर-नर्कटनक सिद्ध बाबा एक
नवीन रानीक संघ बिबाहक संघ मे होइत छल ।

सोमेन्द्रक पुत्र काशीरक इतिहास मे अकभोज, पद्मम्बर, वीरायन तथा रत्नपातक
पुत्र छल । संस्कृतीक काशीर बरेल जन्मल (१०२५ ई०—१०६१ ई०) जवन प्रात-
निक पूर्वोक्तता एवं बोद्धिक निश्चितताक बसीकृत भए जवन ज्येष्ठ पुत्र कलक के" राज्य
बाए (१०६१ ई०) किछु कालक उपराभा जो पुनि राज्य सङ्ग्रह कएल तथा एहि काल्पर
जो १०७७ ई० मे राज्य-काज सौं बिगल भए १०८१ ई० मे काजसङ्ग्रह कएल ।
हुनक विपुली राज्यी सुर्वमन्त्री जवन पत्रिक संघ सजी भए बैलीह । एहि पिता-पुत्रक
राजत्वकाज मे सोमेन्द्रक जीवनक अवधि पाबोन जाइत ।

सोमेन्द्र जवन पुत्रक अग्रज बादावरन सौं लोक जलन्मुख तथा समझित जहाइ
मे जो लोकता सुधारवाक तथा दुष्टताक रचना कर भिष्टताक एवं द्वाचैक स्थान पर
परमार्थक भावना के" बृह करवाक विमिश्र जवन इन्द्राविनी जेबानी के" काव्यक
विविध संघक रचना मे जमीनैह । जलन्मुख लोकक परिचय सुधार एवं अनोरज्जनक
चाहना सौं जेरित भए सोमेन्द्र राजायन तथा बहाधारक जलन्मुख कलाक ललित
सर्वेन रामायणमन्त्री तथा बारलमन्त्रीक नाम सौं प्रस्तुत कएलैह । एहि जन्मक
निर्मात्रक बाला जो बोझि कला रत्नाकर के" मे बृहत्कलाक नाम सौं मैत्राकी भाषा
मे साहित्य जगत मे प्रख्यात छल संस्कृत मे कथान्तर कएलैह ।

सोमेन्द्रक जन्म बिबाह कथासक इति चिक बोधितरभावराजकलासता । एहि
मे जलवान दुइक प्राचीन जन्म सौं सम्बद्ध कारयितानुचक जलवानक पद्यक जमीन
जहि । हीनवान मे मे स्थान जलकक जहि सङ्ग स्थान महायान मे जलवानक जहि ।
'जलवानक' जन्म चिक शुभचरिक । एहि कल्पलता मे १०० पन्नाक (कथा) जहि जहि
मे जलित पद्यकक विमिश्र पिताक गुणीकरण सोमेन्द्रक पुत्र सोमेन्द्रक द्वारा जलवान
मेन ।

बोधितरभावराजकलासताक रचनाक बेट कए वर्षक अवधरहि" एहि पन्नाके"
लिखती भाषा मे अनुचित हीनकाक बीरव बाध्य मेन । १२०२ ई० जन्म लिखकक एक
जन्म बिबाह पुन्यगह-भक्ति-मन्त्रक के हुनक भारत-भाषाक जलान्तर काशीर मे
जाकय जी पञ्चित एहि पन्ना के" उपहार स्वयं मेन कएलकिन्ह मे ३० वर्षक पञ्चा
भारतीय पञ्चित महाकवि ललोककरक महायता सौं लिखकक विस्वात् बिदात् 'सोमोन
जीबावे' कल वा लामाक भाषा सौं मे प्रसिद्ध पुन्या जाक चयिक गुरु पञ्चा एहि
जन्मक पञ्चानुवाक प्रस्तुत कएलैह मे लिखती भाषाक एक लिखान्त जलपञ्चीय, अनुकर-
णीय एवं जलान काव्य जलान जाइत । एक जलान कविक इति होएतहुँ बोद्धक द्वारा
एहि तरहक जलान पाएक सोमेन्द्रक पामिक जलानता, विजाल हृदयता तथा सुन्दर
काव्यजीवीक लोकक चिक ।

कामासहितानर गुणाद्वयक बृहत्कथा नामक संघक जार चिक । ई जन्म १२४
वर्षक एवं १० जन्मक मे विमिश्र जहि । सम्बद्धक मूल संस्कृत कय 'जलान' चिक ।
एक बिबाह द्वारा एक स्त्रीक जहि 'जलान' कल जलान जल तथा ललपञ्ची कलाक

प्रायः जोहि समय जोहि बर्ष मे सन्ध्यात्मक प्रवृत्ति भेला तई समस्त समय सांख्यिक एवं व्यापिकक प्रभावता भेला तथा लोक समस्तान साधि एवं ज्ञान-ज्ञान व्यापिकक विद्या द्वारा दिव्य कबी के' के जोहि समय बनी ओ विद्यानरी नामे दिव्यात् खनीहु बरा कए गिहि प्राप्त कए अपन मनोरमक पूर्ति करैत छन ।

कथासरित्सागर मे बर्णित कथा के' हम स्वभाविकता ओ रोचकता दूहु के' दृष्टि मे राखि अपमानुसार कहु कन कहु बेसी कएत अछि । अतएव एहि मे सुसकथा के' आशान्तर मे प्रतिपादन कहि कए ठाम-ठाम अपन भाषा एवं भाषक सम्मिश्रण कएत अछि । अतः मूल कथाक बदलबाक प्रसंग मे हमर विज्ञप्ति अछि के' एहि मे हम अपन स्वेच्छा सँ कथाक परिवर्तन ओ परिमार्जन मात्र मनोरञ्जनक उद्देश्य सँ कएत अछि । कादम्बरिकता वाचक एहि प्रसंगक वक्ति—“करीति रत्न हृदि कीनु-काधिकम्” बस्तुतः बधाई दिक् । अतः श्रीधरेष कथाक आधुनिक वर्णन मे कथा-सरित्सागर मे छिक्क द्वारा शार्ङ्गीक मनोरञ्जनार्थ कहलैत अछि ।

“विद्याकर-कथा” के' के कथासरित्सागरक पाँचम अध्याय मे बर्णित “अतिदेव-कथा” नामे भाषीक आदम्बु दीविसी मे लिखित कथाक एकमात्र उद्देश्य ज्ञान मे तरत कथाक कथास्तर आधुनिकता मे कए एत महात्मा व्यापिकक पूर्ति कएत आए । अतएव पुस्तककार के' बस्तुतः करैत अपार दुर्भे सँ अछि संगहि निरन्तर सेहो अछि के' एहि कथाक रोचकता एवं सरसता मे हमर अल्प ज्ञानक असम्बन्ध भाषाक दोष एवं ज्ञान-ज्ञान बुद्धि कम होनि आएत ।

अन्त मे विज्ञप्ति अछि के' विद्यान् लोकनि एहि दिव्य कथाक दृष्टि बिहि प्यास नहि कए केवल एकर रसास्वादन कए हमरा आना करबि ।

विद्याधर-कथा

इदं गुणगिरीश्वराय नमः सरान्दोषना-
स्तुतं विष्णु कथाकृतं इत्युक्तं भुवि सुगतम् ।
मम हस्त-यन्ति मे विगतदिग्ध-सामर्थ्यो
भूतं दधति वैकुण्ठो भुवि मयप्रसादेन मे ॥

—क्यासतिसागर, पश्चिम ताम्रक

नगेन्द्र नन्दिनी पार्वतीक प्रसन्न प्रसन्न मन्दरावलोक मन्थन से महादेवक प्रकाशविन्दुको पगोरधि सेंद निम्नगुह्य एहि कथा कही सुधा केँ मे सावर नाग करैत अक्षि ओ शिव प्रसादात् निर्विघ्न विद्धि केँ पवि दिव्य श्रद्ध केँ प्राप्त करैत अक्षि ।

वरसदाशक सभा मे शक्तिवेगक आगमन

सत्तराज उदयन गौड़राजो वासवदत्ताह सैन बक साङ्गाद सेंद अपन पुन नर-
चाहन दत्तक छात्रन-पालन करैत कालवादन करैत छलाह । एक समय वल्लराज केँ
कोनो कारणक्यात् राजकुमारक निमित्त शिवा सेंद कतर जानि मन्त्री योगेश्वरायक
सम्मुख आवि विनक्ति कएल जे “हे महाराज ! अपने राजकुमारक हेतु स्वर्ग
विवाद बनु परी । ई कोनो साधारण नेता नहि शिकाह । भावी विद्याधरक
अधीश्वर एहि पितृक रूप नै अर्थात् एहि उत्पन्न भेलाह अक्षि । एहि प्रसंग केँ
अपन विद्याक प्रभाव सेंद विद्याधरक राजा बुकि सुन्व भुवि । अतएव मगवान शंकर
अपन स्तम्भक ताम्रक गणक सरदार केँ इनक श्राव्य निमुक्त कएने छथि जे परोक्ष
रूप सेंद राजकुमारक सत्तत् रक्षा करैत छथि । इम नारदक ईह सेंद एहि तरहक
संवाद सुनलहुँ अक्षि ।”

जाबत मन्त्री योगेश्वरायक वल्लराज सेंद एदिवरदक नार्जलाप करैत छलाह
ताबतहि मभाषण्डल सेंद चाक दिशो केँ अपन अद्भुत कान्ति सेंद शोभित एवं
कमलक नेम केँ विरिमत करैत किरीट ओ मुण्डल सेंद विभूषित सादग भाव्य कएने
एक मोह दिव्य पुरुष उत्तरलाह । कमरात हुनक समुचित कातिध्व साकार कए
उत्सुकतापूर्वक पुच्छलनिव जे “हे महामात्र ! अहाँ के पिकहुँ तथा कोन कार्यक
निमित्त अहाँक पदार्पण हमरा एह भेल अक्षि ।”

कमराजक उत्सुकता पर ओ दिव्य पुरुष प्रश्नोत्तर दैत बखलाह जे “हे राजन् !
हमर जन्म पञ्चविंशतमानय रूप मे भेल तथापि इम शक्तिरूप नाम सेंद विद्याधरक स्वामी
बनि गेलहुँ । इम अपन विद्याक प्रभाव सेंद जानि जे हमरा लोकनिक भावी अधीश्वर

अर्थात् पुनः हम में उत्पन्न भेलाह अस्ति हुनक दर्शनार्थं एतादृशं यत्नानि अस्ति ।”
एवंकथं वसन्तराज सैऽ निवेदनं कथं कथं दिव्यं पुनः राजकुमारकं दर्शनं कथं फलफितं
भेलाह

अनुपमाना वसन्तराज आनन्दरतापूर्वकं शक्तिकेन सैऽ पुष्पलपिह जे “हे मित्र !
विद्याधरक कोन। प्राप्त कथन जाइछ। हे कहैत रहैछ। तथा अर्थात् ध्यानका कोन। प्राप्त
कथनहुं मे एतन् वृत्तान्त हुनका कहू ।”

वसन्तराजक उत्कण्ठ। केँ जानि शक्तिकेन विनयपूर्वक हुनका सैऽ बाहलमिन्ह—
“हे रत्न ! यदि जन्म मे पाँ अथिभ जन्म मे भीरवान पुनः शिन्धु अर्जुन कथं
हुनक वना-।। विद्याधर पद केँ प्राप्त करैत अस्ति । विद्याधर पद अनेक प्रकारक
हाइल छैक जे विद्या, गदग एवं भाना आदि सिद्धि द्वारा प्राप्त कथन जाइछ । हम
एहि पद केँ कोन। प्राप्त कथन मे निवेदन करैत छी ।”

एहि कथेँ शक्तिकेन महाराजो आनन्दरताक सनधुहिँ वसन्तराज उदयन सैऽ
अथने कथा कहब आरम्भ कथनैन्ह—



कलकयुगौ सौ शक्तिदेवक कथा

११ प्राचीन काल में वह राज नामक से नगर स्थापित किया गया। अथर्व वेद में
उक्त है कि नगर में वसिष्ठजी नामक ऋषि की वासना थी कि राज स्थापित करें। यदि राज
के कलकामा नामक सन्तान उत्पन्न होकर राजवंश स्थापित हो तो वह विष्णु राज चक्रवर्ती रहित
सेवकन गंधर्व राजा रहित। राजा के कलकामा नामक राजा हैं। एक राजा नाम
राजस्थान के राजा से राजा मुन्दरी राजा हैं। राजा यदि राजा के नाम राजा
रहता रहित।

काकम्मा शुक्रपक्षक चन्दनः मदरा सिगन्तरु रुद्रा लवलीह तथा चात्यकालदि
ये पुनारी भण्ड 'उगाह चित्ताह क' ए भण गोभोद ३ का काकम त कयव विकलक
भग कांनुपम कयव 'शु च' दमि कलकपम श्री कदमभियु के 'दे रावी' विना रागक
मोतसुन कुनारी क-या लाक के कदु लनैदु । छनदन दिवरी पुषप शैवन से पदापण
कलितई क-या के उपयुक्त याक कावपटी कए कद कर ताव से मो वि देन काशि जे
दश ०५ भम बुद दृष्टिकमी ५ कय द दृष्टि ।"

[illegible]

कनकपद्मक एहि तरहक कवन सुनि राजक टहल अगामि मे की पकड़ामन
बकल का ललक कनकपद्मक मवन जाए स्नेहपूर्णवाणी मे खपन पुरी से
बजभाई— हे पुरी ! कवन अनुभव एहि दार्शनिक मन रख कीमत मे पावत
आइल अलख देवता, दानव को अनुभव सम्हक कनका पलक काभना से
मगनलक कवन करैत तका मनोवाचिनु पति प्रामक पाचना करैत । तखन
एहि भावनाक दिकुन भए का' दिकन दना करैत छिऐक ।

पिताक हाथ एत स्नेहयुक्त बनन के धुनि कनकरम्भा सम्भावनात पृथ्वी पर आपन दृष्टि राखि आपन संकाययुक्त बजलनैह—“पिताजी ! कन्यासम्पन की विवाहापवानत दक्षिण निम्ननाक हेतु मंगल कान्ति । हृदयदा सेह कुमारी रहि माना निरुक्त सेवा कन्या के को उपलब्ध नहि भाए सकैयु ।”

कनकरेखाक मुक्तिपूर्ण उक्ति सुनि राजा पुनि आकरा कहलथिन्ह— हे पुरी ! वास्तुत कन्याक कनमहि देखबाक हेतु रहइ । वाक्यश्रवणक अनन्तर पठिक

कमला' वाराणसी; वाराणसी से: पौड़वधन तथा पौड़वधन से: कनकपुरी नामक नगर
 गेला: कनकपुरी एक दिवस नगर अछि जे गांधीजी लखनऊ भंगभूमिभवन प्रतीत
 दोहस ओहि नगरक शासक राजा समस्त औकर्यकलाक सम्भरण एवं दीति से
 चन्द्रकनः नाँत मए जाइत अछि किन्तु फाल गदि रहि विवाहन कए पुनि हम
 अपन नन्य भूमि प्रयागमन कएलहुँ ।”

शक्तिवैजय कष्ट-रुपा पर कनकरेता विरुद्ध बजलीह—“सत्ये कहीं ओहि
 नगरक दिग्दर्शन कएने छी । कहीं पुनि कहुँ जे सोन मार्ग से: कहीं ओतए
 गेलाहुँ ।”

शक्तिवैजय द्वारा पुनि धृष्टता कएला पर कनकरेता शक्ति कावित्त। मए आदि
 धृष्ट के अपन दासी द्वारा अपमानित करए बातए से: निकलबासंज । तत्पश्चात्
 अपन रिताक अतए आश अनुनय कएल जे “पिताजी धूर्त नपुंसक मरणा व्यक्ति
 केँ टकैल । ओ धूर्त कहीं केँ तकैल मरहुँ टकए बादैत छन जे कनकपुरी नहि
 वेम्पने छन पुन व्यक्ति प्रयत्नक संगे ने शिव छी मधव नामक दुइ धूर्तक एक
 कथा हम सुनबैत छी: —

शिव तथा माधव नामक धूर्तक कथा

“रत्नपुर नामक एक भेद नगर अस्ति। अत्राष्ट शिव तथा माधव नामक द्वादश प्रख्यात धूर्त रहित कुलाहः। आ द्वादश जवन अपन प्रपञ्च सँ प्रसस्त नगरक लोक केँ ठकि छैल। तखन अपन पत्नीक अंगतए मुँ माधव नहि देखि परस्पर विनिमय कए निरुपण कएल अे आदि नगर केँ त्यागि अपन मनोरथक पूर्तिक हेतु उच्चैन खाह। तखन पदुचि राज पुरोहित शंकर स्वामीक अपरिमित धन एव हुनक रतिमन सुन्दरि कन्य। केँ अपन लक्ष बनाए आ द्वादश धूर्त अपन प्रपञ्चक लाल प्रसारित कएल।

माधव सँ आदि नगरक बाहरक एक गाम मे जाए अपना केँ एक राज-कुमारक रूप मे सातम्भ करए आसए अपन कन्या संग रहए लगेल। तथा शिव सप्तचाचोक रूप मे विष्णुक तटक रूप मंदिर मे अपन निवास बनाए आकर पारु शिव कुश परमात्म मृगचम इत्यादि स्तवाए देल। आ निरुप निष्ठ। पूषक हान, पूषक संग निरुपित रूपक आचरणक लागि रवि कालवापन कए लागल। भिक्षाटन सँ अे किछु अन्न आ पदार्थ करैत छल। आकरा तीन भाग मे विभक्त कए एक भाग सँ कीछा केँ हाँगर अतिथि केँ तथा नगर भाग आँ शयन खाइत छल।

एवँ कजेँ अपन लवधनक साथ आँ लोकक मन केँ अपन दिगि आकृष्ट कए लेल। लोक आकरा एक निमिष तफसी धूनि अधिधूर्तक सत्कार कए लागल। शिवक प्रचार एवं प्रख्याति केँ अति माधव एक समय कवटी राजकुमारक भेष मे आसए आएल तथा शिवक चरण पर अवलम्ब अतिधूर्तक छलि प्रणाम कए उपलित लोक सँ कदम प्रारम्भ कएल अे “एहि दुनू ने एहेन किछाँ क्षमर तफसी नहि छथि।”

रातए दिन माधव अपन एक मित्र केँ एक जोड़ पोती तथा एक जोड़टा दण्ड कदम मे भँतुँ शंकर स्वामीक अंगतए आह हुनका सँ कदम मे माधव नामक दक्षिण देशक एक राजकुमार अपन नन्धु-बाँध सँ अति भए अन्य राजपुत्रक संग अपरिमित धनक संग अंगतए अण्णाह अस्ति। आ अर्धक रथानामितार्थ भए हगए। एतए पहुँचैन्ह तथा एहि पस्तु केँ उपहार स्वरूप कहीं केँ भेंट कएलैन्ह अस्ति।”

माध्यम कृपा विहित का कृत वाचनवासी के माध्यम वाणी के
 सुनीलक । माध्यम पर्याप्त मर मर पुनः इत का कर कया इतक मर लीमर
 मरकादिन

राज्य विन साधन अस्मत् पानि स्नान- पुनर्दत्तक नैव रेनु तेनान् ।
पुनर्दित अस्मत्पूरक पुनका अस्मिन् विनान् । ननुपरान्त अस्मत् अस्मिन् विन
पुनर्दत्तक अस्मत्पूरक अस्मिन् विनान् । ननुपरान्त अस्मत् अस्मिन् विन
विनान् अस्मत्पूरक अस्मिन् विनान् ।

[illegible]

मौजमद काजमद एव काजमद का जेति गू दिन इरी से उत्कृष्टम मय
मेलाइ तेनी का माधव म. का बह काजमद-इ जे कइत इगई सय विधान
काज ।"

पु. निरुद्धादि मन्त्रक आनुसङ्ग के आ. पूर्ण संकल्प गार्हपत्य क्रियम भेदानुसङ्ग तथा आपन आतिथ्यागक कारणितरुद्गु तत्त्वों गार्हपत्यक आभ्युपगम निमित्त कर्तव्य एवं यह आभ्युपगम के एक पेट्री तथा दत्त कण आपन मन्त्र वन्त्रक सेम पुनर्दत्तक गुह के प्रत्यक्ष कालक आनण पेट्रि को भूल केदि पेट्री के पुनर्दत्तक आनण में प्रत्यक्ष वीज

प्रत्यक्ष में न. का धूलें पुनः ऐतक गृह न बह आसन्द सं. रौन झल किन्तु
विशु कालक उपमान कपन पवक म न वी र्व प्रान्ता कपन, का
आसन्दा कपन कीजनक आवा न कट्टी कप कपन गुनं कं मुजन अवा देन
पुन द्वि दिनप्रदिन का कव हासक वीन म. विम मदा मरमा।

[illegible]

माधवक कथन सुनार पुनर्दिष्ट कतिपय वाक्य कें अनन्तविन् मुदा माधव
कोनो ने कथा वाक्य कति वाक्य कें असंगत बनय आगत कर देनविन्
इहि पर माधवक एक मूल सिध पुनर्दिष्ट कें असंगत देन वाक्य मे "हे शिष्य
शिष्यक तरह पर किव जानक एक कति निर्दिष्ट वाक्य रहैत सुचि । आदि वाक्य

जबने माधवक देल वा नैऽ धनई दए दिख वा कोका के बिबु मृग्य मए करैत छल दए कुठार कक ।”

शिवक अभिषाग के जाति पुरंदित खाँदि नकली आभुषण के हवन बाँति बाना से हुनका जवन धन दए पूगक कए देल भए । खाँदि बुढ़ भूत उग्रजल मए खाँदि पुरंदितक देल धन के आहारा-विहार से धन कए जागल छल जगन्नाथ पुरंदित एतल शिकारल ओइक क संन्य गेसल । ओही खाँदि मरक पछि कए पुरंदित से करल जे “ई के दस आभुषण निमाता बिकार जे एहि नकली वस्तु के ऐतल रूप में निमाय कए केन जाय ।”

ओहीक बचन पुरंदित के नहन समाज कएल देल जे हुनक छे प १३ ओही तरह आभुषण परकुटल होय लामन केन समता सेव हुनक हृदय में गिरल एत मए रदल के । खाँदि मय आभुषण लए जवन जग क आगत गेल छल तथा हुनका से विवृति कएल भए जे आन आभुषण लए हुनक धन जग क कए हेमिद भए । ओ प.इ.न.ग.इ जे दस १० मय धन दए दल ।” लखनन माधवक खाँदि जए खाँदि आभुषणक धन से कएल गेल दस माधवक हस्तर के “ई मय आभुषण हमर नहि बिक । हमर के समस्त सगिहक छल पुरंदितक एत नहन सेव के नक कए देल । जे खाँदि बुढ़ भूतक गेल राजक कोन निवेदन कए केव । राजक कसबु आव को नकनि मय जवन जवन बुलायत पूषक हुनक कएल भए ।

हुनका लोकनिक कथा सुनि राजा एत हुनक जैन आन गृध्राद गिहू गेल बज्जल जे एहि में शिव को माधवक कोनो दस दस नहि छैक । समस्त लामन से आनुर जल गेल पुरंदित के आन धन गजाल भगतलक पार बसव बकने-ई

जैन इ गिताउ । खाँदि हमर निवाहक कनो अप्रगत नहि दए मयक प्रतीका कक ।”

जैनक ह्वाक छ एत बुकिगु कक के सुनि राजा कदमोपन के “ई पुन । कथा जगमिनई गिताउ गंजल कारक एत कए । कथाक मय गुग दस लोकक भिरग होयल एत १३ निगहक भए ताहु जे बज्जलक दस मय जैन कोन से नहि जैन कए केव । एहि नकल विषय पछि माधवगत मनुष्यमाई में पाछल आहुत लयवि जगम बुलाय कएल दिगेल सेव बुझ के लनेव । पुनक अग्रिम मय कएल मयभला को मयभलाक बादक को दएव जगम हमर मयभलाक उदर से खाँदि स्वच्छा से बुझि नहि रहि ककैत को । एहि मयग से दस कद के दसदसी क एत न इ कथा सुनैत को । —

इन्द्राणीक कथा

मो.मि.र.को.क. तह.वा. कुमुदपुत्र नामक एक जंगल काष्ठि. खो.प. वरुणायमी
 मो.म.क. एक निम्बिक तपस्वि गौतम कृतः। खो.मि.प्रा.द.न.मि. के किमु जल धारण
 करैल बुवाह खो.हि.मि.द.म.प.पु.ग.क. जपन अथवा वापन करवि ताक इरुम्यामा के
 खो.द.न.का.म.कु.म.प.क.त.ह.रेल.ध.न.।

[illegible][illegible]

हमारी विद्या बलवत्करी है म, सुखद दी क करी, मय ॥ हमीं दीक्षक
निवारणार्थ कर्तव्य होय, जइस करि दल ॥ नृप विद्या बलवत्करी मय
कर्मोद, तह नहि दल ॥ अथ, नृपक मय विद्या, विद्या बलवत्करी मय ॥

[illegible][illegible]

यिन्नु तपः श्रद्धासंग्रहान्तु शो शक्तिरेव के शीतल आएकाक प्रथम एवं हुनक परिचयवाक्य पुस्तकधित्तु ।

शक्तिरेवक परिचय शक्ति विष्णुवत्त हर्ष सेंट गिहल भए हुनक साक्षिपुन कए एहलधित्तु के 'हे कयु । मास्य प्रसादात् विदेश मे वन्तु-वैचरक दर्शन दोहय छद्द' समर समिप्रीत हो सग्न बय कुट्ट एके नथर मन्त्र कम लार् विधिक विद्वम्भन के विदेश में पश्चित भए रहल हो एकर छद्द के बाकि कलभूमिक अमृतक कदनी सग्न हमरा सुम्भक अनुभव भए रहल अछि ।

शक्तिरेव श्रुत मिलनक एहि आनन्द के समन संकल्प पुस्तिक प्रथम सोपान पुस्तकै-६ तथा एहि समग्र हुनक सम कए ओ संताप तिरहित भए गेल मार्गक संग आजाप में रहल विनेत गेल मुदा उद्देश्य पुस्तिक चिन्ता सेंट शक्तिरेव के निद्रा नहि देखि विष्णुवत्त हुनक गनोग्य पुस्तिक समर्थन करैत एहि प्रकारक कथा हुनका सुनावए लगलधित्तु :—



कपालम्फोटक कथा

“प्राचीन काल में मरुना नदीक तट पर एक ग्राम में गोविन्दस्वामी नामक एक विविध सहाय्य करैत छलन्ह । ओहि ग्राममें के अनाकुरत एक क्षत्रिय राजा नामक हुई योद पुत्र रहलन्ह ।

हेनकरन ओहि ग्राम में अनाकुरि होला तँ अकाल पकत अन्न-पत्रक बुटि होला तँ अन्न कपाकुल मध्य सरण लागल । गोविन्दस्वामी केँ साकस एहि क्यथा के गहि बेसल होलन्ह । ओ वधा केँ इवोभूत मध्य अपन स्त्री केँ कहलन्हिन्ह “हे प्रिये ! त्वमो कतवु शिष्य मध्य नहि रहसोइ अछि । मध्य एतल श्रावण में मुक्त हुनकर राजेष्टक अन्त्यान मध्य जाइछ । चंचला शत्रुमोक अपेक्षा कीलि लख अन्नम पिक । अन्नम वायव्य भन पर में अछि केँ सभटा लोक केँ दण दहि रहलन्ह केँ छुकि वायव्यी अछि ।”

एहि मध्य ओ अपन समस्त धन केँ बहि गोरवस्वामी अपन स्त्री, पुत्र एतल क्षेत्रक मध्य गोरवस्वामी केँ परमाण करलन्ह । एतलनेँ गोरवस्वामी पुरुषि एतल भगवतक स्तिर में निजामक इतल आभय मध्यलन्ह । दिन तँ पुत्र-अन में बाण्य मुदा गति ओ अपन समस्त परिवारक संग एक कृषक पत्र में चितलन्ह ।

पत्रकारी अत्यन्त सभ्य भित्ति मध्य लखनय होछ । पुत्र सम में विजय तँ हावतहि अछि मुदा तँ की कनिष्ठक शंका मध्य वैतान विहल मध्य अपन कथम्य वष तँ इति अछि ।

पुत्रक शंका मध्य गोरवस्वामी केँ अकस्मात् पुनक कनिष्ठ पुत्र विजय तँ लखनयन्ह । ओ शोचनक मध्य प्रकाश तँ अरधर केँ तँ बाजल अछि पिताकेँ । मध्य अतिशय तँ अकाल्य मध्य गेल छे । एतल कथक निजामार्थ अति अकाल्य अयोग कर ।

पुत्रक एहि सरदक अन्न वन्न केँ मुनि कथ तँ अकाल मध्य गोविन्दस्वामी कहलन्हिन्ह “एहि विधान गति में अगहि कथक दछ ।” पिताक तकाराथक एतल तँ वैतल छेओ ओ बाण्य करतक “हे पिताकेँ । ओ की नहि देखैत छिदैक जे अतिशय सभ्य अछि । अतएव जीवनक रथार्थ मध्य अन्न मध्य अछि ।” पुत्रक एहि कथक अतएव पर गोविन्दस्वामी पुन वनत । हे पुत्र । ओ तँ समयान पिक अतएव ओ चितल अछि । मध्य, पिताच मध्य इत्यादि तँ मुक्त अरधर समयान में अछि ।

जलाह राजा अशोकदत्त के मन्त्रिणा से जयन्ति मणि हुनका बनाए कुली लक्ष्मण कारेश देलखिन्ह ।

राजाह कारेश पानि काश क से उत्तरि अशोकदत्त आदि बहलवान के कथमाहिन्ह के बटकि देन । उपरिपत दहन धी अशोकदत्त पराक्रम एव मंगल मंगला करए लागल तथा बन्धवाद एव हुनक अभिषेक कएलन्ह । काशी मे मताप मुकुट अशोकदत्त के प्रभु बन देलखिन्ह तथा हुनक पराक्रम से मंगल मय हुनका ओ अपन अंगरक्षक नियुक्त कए दलखिन्ह ।

काशी जग कवा से रहि अशोकदत्त अपन क प निपुणता, कौशल एव पराक्रम मलादान् व जाक विपदाय होने जलाह तथा राजा अशोकदत्त के इयम से मानए लागलखिन्ह । अशोकदत्त के राजा के पति इदिक भक्ति सुनैन्ह तथा राजाह कारेश पानिवा से ओ अपन प्राणा तक उत्सव करवाक सहेन उयन् गैल जलाह ।

एहि तरहक व्यक्ति के जीवन मे कनेको कह कबैल तथा जड ओ ओहि कएक समस्त मंगल मय पैरे के नहि कहैल न । गिह के पाम कए सब सुखक उपभोग कैंत कछि अन्यथा कहैल नीक नह भए जाहन पैर ।

अशोकदत्त के एहि तरहक अत्यन्त साधन । एक चतुर्दशी के काशीराज शिरपूजनाथ नगर से कतई बाहर गय जलाह । पूजाक उपरान्त प्रहसन ओ समयान हाइल नगर खड़ेन जलाह कि अकस्मात् एक गच्छे हुनका सम्बोधन कए कहय लागल 'हे राजन् । इतर दक्षिणार्धे चित' अपराधक इस एव शूनी पर चढ़वाय देलैन्ह । कलम्बक दुपार मयरा = इ व इत अछि, अह एहि तरह इमर तेसर दिन भिक । इय ध्यागल ओ जल एव इतर गुणक कहल कह ।"

एहि तरहक जीवन के मनि दया न । इहे गूत भए अशोकदत्त के ओहि आत्मन्याय के जल देलक कारेश एव न । अपन ने नगर के गेलाह मुदा अशोकदत्त जल लए इनरीन के मंगलन कएलैन्ह । ओ चित्तक प्रकाश तरकीबक दृष्टीक हेतु परन्तु नु राजाह कोलाहल तथा बेत निरुक्त सन्धक संसारक शब्द आदि द्वारा अवकाश मे सम्बन्धित मायक अनुमान कैंन कालवधिक निवास भवन सन इनशुन मे प्रवेश कलैन्ह । आनए भेटे न ओ जे से कहलखिन्ह "राज ख के अब मंगले सुनहु ।" एहि पर एक दिनि से जलने आगल जे "इय मंगले सुनिदेन्ह ।"

अतए गेला पर अशोकदत्त एक चित्त न कह नि तथा ओहि समय शूनी से बधन एक पुरा के देखलखिन्ह । शूनीक तीर्चा मुन्दर अलंकार से अलंकृत एक मोट कैंत ओ के ओ कहो देखलखिन्ह जे शुनसफाक चन्द्रमाक पुरा कलाकन अपन सीन्दर्यक सीति से समझान के प्रकाशित करैल सुनीह ।

अत्युक्त कथा के सुनि गया कशीकदत्तक अथावाण्य मनोदत्त के वृद्धि अत्यन्त प्रसन्न हुए और दिव्य आभूषण के साथ शनिवार सप्तमी के सप्ताह महाराजी के कोष भूषण दण्ड ओहि रातुक कम बुनाई से डूगका प्रचलन करौलकिन्हु ।

महाराजी अयोध्याक ओहि कथा के जानि हुनक धर्म, कर्म एवं अन्त गुणक प्रसंग में खयाल से गुल्लकविन्द तथा राजार द्वारा हुनक भेद कयो। उक्त गुण तथा सुन्दर स्वप्न आदि के जानि ओ विनयपूर्ण कथासंगे "हे नाम लक्ष्मी चञ्चला सेला छला अथवागहि" में नष्ट हुए सादृश्य कृत। पणक अपेक्षा एही तरहक गुण शीघ्रि विरक्त अतएव अयोध्या के कथनो गुण से मदनलोकाक अनुसन्ध देखि हुनक तेंद मनोरथ कवि के मदनलोकाक वाग्द्वारक अयोध्याक संगे जेड मए सादृश्य सेड उत्पन्न होइत ।

मदनलोका कथाकदख के मधु-उद्यान से देखि हुनका पर पूर्णहि आश्चर्य मए गेलकिन्हु । एहि मर्मग में हम ओकर सम्यक से वृद्धि चिन्तित मए तुलना कर किन्हु ने एक अपूर्व स्वप्न केला के एक दिव्य स्त्री सम्यक उपस्थित मए कबलैन्हु जे 'हे पुत्री' एहि मदनकथा के कथा जान पुनः के रहि एए अयोध्या के बैबैन्हु । ई हुनक पूर्ण अन्यक अक्षित धनी विरक्ति ।

महाराजीक उत्कट अभिलाषा के जानि कथाक प्रति रनेह, अथवा मनक मनोरथ एवं वैभवक अनुसार चिन्तक आरिचक्रांत होमए लगल। तथा अपूर्व समा-संगतक कथयो एवं विनयक भावावय मन मगनैन्हु। एवं अयोध्याक अथावाण्य मिल ।

एककर्म दिन विरक्ति हैल । एक समय महाराजी ओहि दिव्य वस्तुके सीधै एवं अपूर्व निमांस कथा के सुनि सुप्रसन्न नारी स्वयंभवा कथासंगे तेंद आकर जोड़ा बनेराक अनुरोध कएलकिन्हु । कथासंगे महाराजीक सुनि हेतु नोक-नोक खाना के बाण्य आदि वस्तुके ओका बनेराक सादृश्य दृष्टकिन्हु ।

वस्तुके निरीक्षण कए खानाक अपन अस्मरणता के प्रकट करैत गय तेंद निपटल करैत बाजल के 'हे महाराज ! एहि वस्तुके निमांस गानक द्वारा नहि मए बेकरारक द्वार सेल क रहि । अतएव ओकर जोड़ा ओहि रूपक मए सदैव उत्पन्न सेड का प्राप्त सेल आदि ।

मनोरथक पूर्ण नहि भेला सेड चिन्त में गिराक प्राप्तिमें प्रसन्न होइन्हु । ओकराक अस्मरणता के जानि राजा एवं राणी दुहु के चिन्त देखि अयोध्याक संगे अन्त में आनि बजलहु—“हे राजन् चिन्ता अनु करो अथवा कएला सेड काव कार्यक पूर्ण नहि मए सदैव । हम ओहि वस्तुके जोड़ा के जानि सकैत हौ ।”

कालक्रमेँ इस कन्या शैशवावस्था के पार कर चौस्तावस्था में लार्पित
आती है। और नतीजतान् स्वच्छ मनु नीलकण्ठ स्व विशाल नेत्र, अनुपम
शाल, अनीकित नम्रता तथा अत्यगम्य नैति के तैलि होकर अनुरूप बरक
देतु हम उद्दिष्ट मातृ गेता रही। एक ई पिताक अधीन दोनरे कन्याक जीवन
संजन के समय मए सङ्केत बकर। आन कन्याक गुलक अभिलाषा नहि होइछ।
किन्तु ई समय तैंड आपन यथामे नहि होइत छैक। विशेषतः पिता, जन एवं मातामह
तैंड पूर्व अन्त्यक संस्कारक प्रमादात् उपगम्य होइछ। अतएव हम आपन कन्याक
आदित ईश्वरेश्वर पर शक्ति देल

माधवशान्ति अदि चतुर्दशीक रात्रि ये रात्रिक संग जगृत अर्ध के
आर्ध सुन्दर वराकन्यी एवं उभृष्ट जति अवन कन्याक देतु उपपुत्र पर
भुक्ति महाक मनोरथक पुत्रिक बतु हम अर्ध के भ्रम में रात्रि आपन माया
दा। अपछ तैंड उरुल तथा पुनि अर्धक आकर्षणक देतु आपन एक पर्यवेक
के शक्ति हम अलक्षिता धर गेल। हम अर्धक अगम्य एवं अनन तैंड
मन प्रगम्य भेलहुँ तथा आपन अर्ध हम कन्याक संग विचार कर अकर उपभोग
कर जे सब तरह अर्धक अनुरूप छति। हम आपन होकरई पर्यवेक तैंड
देवे करइ संभदि अर्धक अलक्षणाथ हम सतत प्रपन्न करब जादि नै हमरहुँ मुक्त
सन्निहित छति।^{१०}

राक्षसक एहि कथा के गानि अशोकदत्त स्वर्ण एवं सुन्दरीक सामर्थ
आकहिँ सिद्धि प्रयास छै। आकाश माग द्वारा अशोक नगर के गेलाह। ओ नगर
अशोकदत्त के दिन्द एवक निगम तथा तथा राक्षसराजक पुत्री विद्युतगन्धि पावराक
संस्थान सिद्धिजन प्रतीत भेलैन्ह। अशोकदत्त अशोक गीर्ण गल सम्पन्न एवं स्वस्त
अशुभनाक आमार विदुषधन के अजद मन नेमरअक तथा विद्वगित कपालक
मातामह नरवृत्तिक एवमात्र सोमा भुक्ति आनन्दविमंर मए रोइक कालक हेतु स्वतः
आपनहुँ के विचारि गेलाह।

एवकमेँ दिन बिगेल गेल तथा अशोकदत्त के आपन संक्षमक स्मृति मेनेन्ह।
अतएव एक दिन राक्षसी तैंड ओ परमपक आग्रह कएलबिन्ह। अमाएक आमार पर
आ। अशोकदत्त के भयवैक संग एक स्वयंकुमल मेवा बेलबिन्ह तथा आपन
शिद्धि द्वारा आकाश चार्म तैंड पुनि अर्धक इमशान में हुनका फँसा देल अतए तैंड
आ हुनका अनने लगीह।

इमशान आदि अर्ध पर-वृक्षक नीचाँ मे बैसि ओ अशोकदत्त के अविष्ट
भए करए लगलीह—^{११} हे पुत्र हम मायेक चतुर्दशीक रात्रि के अर्ध अर्ध छै
अर्ध लीपि के तैंड अर्ध एवक आग्रह तैंड हमरा तैंड भेट होएत।^{१२}

आजो-कल का यह पुनः पुनः आगम धार्मिक लोग किन्तु दिन प्रति दिन चिन्तित है, तत्त्वज्ञान की एक दिन आकाश में, कदाचित्—(५५) यह भी एक प्रकार का विज्ञान है।

आजो-कल का यह पुनः पुनः आगम धार्मिक लोग किन्तु दिन प्रति दिन चिन्तित है, तत्त्वज्ञान की एक दिन आकाश में, कदाचित्—(५५) यह भी एक प्रकार का विज्ञान है।

आजो-कल का यह पुनः पुनः आगम धार्मिक लोग किन्तु दिन प्रति दिन चिन्तित है, तत्त्वज्ञान की एक दिन आकाश में, कदाचित्—(५५) यह भी एक प्रकार का विज्ञान है।

आजो-कल का यह पुनः पुनः आगम धार्मिक लोग किन्तु दिन प्रति दिन चिन्तित है, तत्त्वज्ञान की एक दिन आकाश में, कदाचित्—(५५) यह भी एक प्रकार का विज्ञान है।

आजो-कल का यह पुनः पुनः आगम धार्मिक लोग किन्तु दिन प्रति दिन चिन्तित है, तत्त्वज्ञान की एक दिन आकाश में, कदाचित्—(५५) यह भी एक प्रकार का विज्ञान है।

आजो-कल का यह पुनः पुनः आगम धार्मिक लोग किन्तु दिन प्रति दिन चिन्तित है, तत्त्वज्ञान की एक दिन आकाश में, कदाचित्—(५५) यह भी एक प्रकार का विज्ञान है।

हरण सावि काव्यमत्त कोधित मय स्वत कोतय अथवाही तथा काताकरनाक एहि कृति के देखलैग । का कापल सेड सुनाइ अंतकारक मायग । सेड सुना वैभवमत्त काताकरना के देखितहि जेना हुनका बिनु सोन रज्ज गलेन्द सो अपन हाथ के केहि दम तथा हुनका हुनक वापस पर लपि कातय लगलाइ ।

काताकरना सेड हुन सुनाइ अवन कन्तनक स्वर से धरित सो बजलाइ—
"इय काविक कन्त निजवदल सी । दुभानवदा इय काविक दिन धरि रहल कन्त सुनाइ । काइ काइ कन भाताक दशन पावि कन्त मायल । काविक सेड सुनि के अथवाही र हुनका अवनवदल काविक अन्तपान भय सोल तथा इय काविकतनक समदम हुन इयका भय सोल ।"

काविक सुनि काताक बीच एहि तराक बात लाल कय रहल हुन नाइ अन्तर धरित कोशिक न गक विजयनक हुन काताक मार्ग से कोतय कावि काइ हुन माई सेड बहलविन्द से काइ ल'कनि विषय विहट । मायक काविक काइ काविक एहि दशा के अंत भिक सुनाइ । काविक काविक काविक अन्त मय सेड, अवन अवन चला क हुन मयक इय विनायक काविक अन्त मय सोल ।"

तत्पश्चात् का सुनि विनायक रजि हुनका मरि लपकलाय मय कोशिक विनायक काविक काविक मय सेड विनायक विनायक स्वत अवन एहि काविक रज्ज कय । हुनका काविक के देखितहि विनायक रजि दलीइ तत्पश्चात् काताकरना अवन भाई एव काविक विजयनक मय काविकमार्ग से काविक काविक काविक ।

का कन्तपानी के से विनायक रजि नाइ इहो से का कोशिक अवन सुनि हुन के काविकमय न इयि काविक का स्वतक अन्त सुन । काविकमय विहट विहटलाइ पर का विजयनक के काविक काविकमय कन्तपान तथा काविकमय के भूवि भूवि अथवा कय काविकमय ।

कन्तपान मय से विनायक मय मयमय सुनि सेड इहोहि काविक अन्त से काविक से सुनि सेरेक ।

काविकमय काताकरनाक अन्तपान मय विजयनक काविकमयक सुनाय क सुनि इय मय काविकमयकाविक एव काविक तथा सुनि भाता क काविक काविक कय काविकमयक अवन एहि काविकमय ।

काताकरना काविक के विजयनक काविकमय रज्जपान पावि को उन्तुल मय सेलाइ तथा सुनि काविक काविक काविकमय । तत्पश्चात् काताकरना अन्तपानक मय काविकमयकाविक काविकमय पाविक से काविक

[illegible]

एहि तरहे भाषण जाल गेल से, अखेर के अपन विद्यालय प्रमुख से अपन
मौलापिता एवं कजरे के विद्यालयन कए विद्यालयर बनीनेक तब कायडी गेल
प्रमाणधरुन से, जाला अए लपटिबेर काकाक भाग से, विद्यालयर लक के गेल।

इति तदर्थं दिव्यं पुष्पं धातुवत् कारणे मनुष्य जाति मे भव्य भव्यं च ॥ ३ ॥ तस्मात्
स्वर्गस्य स्वर्गस्य मनुष्यस्य स्वर्ग एव प्रतीतिः के भवत्येव पुष्पं धातुवत् कारणे मे स्वर्गस्य
स्वर्ग इति तदर्थं ॥

[illegible][illegible]

भाषाभेद । सप्तमी जाति में सप्त से अठारह तथा गुरु चरित्र में आठव-
साठव का विक्रम संवत् में पूर्ण कहते हैं । अतः सप्तम संवत् नवम संवत् का ही है ।
एहि ही में सप्तम संवत् में विष्णु का स्थापना करने की शक्ति । अतः सप्तम संवत् में
विष्णु के अंतर्गत सप्तम संवत् का ही है । अतः सप्तम संवत् में विष्णु का
स्थापना करने की शक्ति । अतः सप्तम संवत् में विष्णु का स्थापना करने की शक्ति ।
अतः सप्तम संवत् में विष्णु का स्थापना करने की शक्ति । अतः सप्तम संवत् में विष्णु का स्थापना करने की शक्ति ।

संभवतः कमलानुसारं चक्रिदेव सत्यव्रतक मंस मद्भुजमान मेः गलकट कोष
के प्रस्थान कर्तव्येन । समीपक जगत्संस्थानां हि गणय दायू सन सन मेव मेव
देवा मया सन सन नाय के देवि चक्रिदेव मेः सुख सुखे सुख । वीरिगुण

हेमन्तर सेऽ साधना पद्योगण अपन अपन समेरा संज्ञक जे परस्पर अनुभव माहीं
 ने बाबासाय करैत छल, जे पद्यो बतए भोहि दिन चराए गेल छल । तसँएक घुतान्त
 को एक शायरा सेऽ करैत छल । ओहि पद्यो सभ्य सेऽ एक बूढ़ पद्यो ब कछा जे "हम
 काह कनकपुरी चराए भेल छलहुं तथा कहिन्ह केर जाएब ।

शक्तिदेव के आदि पद्योके वचन असुलसल सुन्दर लगलैन्हि । आदि
 नगरक दशमक विगिला ओ एतेक विपत्ति केँ सहलैन्हि आसिर काहक गितचरक सेऽ
 हुनका पत्नी चम्पनैन्ह । अनपन गमक भवक मानाहो पर ओ इतिथि यए अपन
 कछ भेलाए केँ विगिरि कहैः कहैः आदि पद्योके सदाए साए आकर पद्योके सन्दर
 सुन्दर रहलैन्हि ।

प्रतःकाल सान सान पद्यो अपन-अपन गन्तव्य स्थान केँ गेल तथा ओ
 बूढ़ पद्यो पद्योके नौचो नुकाएल शक्तिदेव केँ सह कनकपुरी पहुँचल । ओतार ओ
 एक बिलासण उद्यान मे चलि गेल । शक्तिदेव आकर पद्योके नौचो सेऽ इतिथि दूर
 साए दसलए लगलैन्हि ।

कनकपुरीक उद्यान मे रहलैन्ह शक्तिदेव बूढ़ गोट दिवस ओ केँ कुल तँ पैत
 दक्षिणविन्दु जकर अपन सायनसक समूह, बेनी, अमेली, मूली, सायरी एवं फलभी
 मकोन भुजगा बाइत छल । प्रथम कार्त्तिक पवन सुनि-सनुइ एवं बूढ़ तन्मोके
 काक माइक मोहभ सेऽ शक्तिदेवक ज्ञाना मोन केँ दुखाइत कए रेल

शक्तिदेव ओह बूढ़ कोक समक्ष साए भित्तिमा कणल जे "हे सु-दरि ।
 हे मोन दवान धिकैक । तथा कहै कोकनि केँ ओ ।"

शक्तिदेवक परनक उतर देत ओ ओ बचनोह "हे विद्याधरक स्थान कनक-
 पुरी न भक नगर धिकैक । एहि नगर मे चन्द्रमसा नभक बिबाहरी रहैत छथि ।
 हमरा लाकनि हुनके मांजिन छी " शक्तिदेव काह बूढ़ को सेऽ निजनि फएल जे
 हम चहै लाकनिक स्नायकी बिबाहकगुणारिह इशानाभिलाषी छी तदए कहै
 लोकनि समस्त हुनका सेऽ भद करवाक कह करी " "

एहि सगहो शक्तिदेवक प्रसन्न कएबा पर ओ ओ हुनका नगर सभ्य स्थित
 माधिकाक लगभ सभ मोलाक दिवाः सऽ मुन सभकोक सपन सन एका दिव्य मरा मे
 लए गेलैन्ह तथा मोतहारी द्वारा शक्तिदेवक ओ गमन एवं हुनक ओ सभासक प्रथम
 मे चन्द्रमसा केँ सयगत कराओल ।

प्रतिहारीक द्वारा मनुष्यक समस्त आशयनक प्रथम मे सानि विबाहकगुणारि
 सत्यन्त विरहित मेलीह तथा अनुकूलपूर्वक प्रतिशोभहि हुनका अपन समक्ष
 बसौतभिन्ह ।

राजकुमारिक यदि तबहुँक कथन सुनि शक्तिदेव कायुक्त्यापूर्वक शक्ति टटलाइ—
“हे राजकुमारो ! इस सांचयादी छी आ मिम्मायादी एकर नियम होइ बाझी हाथर
सुदा कहै । हमर एक कौतुकक ले निदारीक कक ! कनकपुरी में कनक पलंग पर
बाही में इस अलङ्कारक में देवल छी । एतए लक्ष्मी कय तो देखैत छी ? यदि तो कन
पलंग देख के हमरा कहू ।”

शक्तिदेवक यदि उक्ति कँ सुनि कनकम्मा विरमयपूर्वक कथन पिता सेइ भज-
लैह “हे पितायो ! सुनि है कनकपुरी देखलविन्हु कहि । अतएव ई सोयँ कनकपुरी
मेला पर हमर प्रति दृष्टि इ तथा आनख है हमर आनी तीन बँदन हीर विवाह का
विद्याधर नगरिक—सब प्रीत जानैह । इस गुनक भावक कारणे कहैक सब प्रीत
मेल कलतु । काब सुपर भावक जान मर मेल । कनः इस कथन सुनक कसेपर में
मदक कए कवन दिव्य लोच कँ जए रहल छी ।”

यदि तबहुँ कथन पिता सेइ कहि कनकरत्ना कथन मानक शरीर स्थिति
कनकरत्ना मर मेलैह तब व मधवन में कनक मँजन हुँकर लागल ।

कनकरत्नाक यदि तबहुँ कथनाने भेला ही, शक्तिदेव कायुक्त्या पूर्व
विद्याधर कनक कलहाइ । कनक दुपगल एतं उपरुखण हाता छक छी धर्मिक
पुषर सेइ जइ एव भोजनरक्ष हाता निरुद्धता दुपक कनकानि गुनि समकक कटाक्षक
दशन में एव कनक मर बाइल । कन का देखन भज एव कनक कहुँ नै-
होइतहि का कनक हाइ में बँद प्रीतारीक चरित्रपी जानै एव नैना प्रीतारक
कह के कहन केन छनि ;

शक्तिदेव कनकरत्नाक विरमयानि में लेन मर विद्याधर के को विपक
नहि पुनि कहुँ जान सेइ कनकपुरीक साचा करिय काय कनकरत्ना सेनैह कहि ।

कनकुरा काय एव भज क वाणी कन काय में काय बाइल, भज एव काय कँ
देखैत ही । एव बाइल तथा काय एव कनक विरमय कथन मर में भज होइल
छकरा पानियन कन ले में उर रुनक गुन मर मरैल ।

कनकरत्नाक शक्ति देव संकल्प का शक्तिदेव नक भज नगर में अनेक
दिवक साचाक उराला के का । विरमय नगर में कथनारु आनख का पुन का ही
लगाइदय कनका कँ वाचन न मरै में लगल छन । मरैत न कनकरत्ना में पुन
काविनय कनका काय मर नाव टटल पर का काय कनका कहै कथन
काविमान कनक सेइ शक्तिदेव के कथन कनकविन्हु ।

कनकरत्नाक कनक कनक पथातु शक्तिदेव सेइ लनकरत्ना के नाव टटलाक
उपरमर ही । मर कहि मरम धर्म कन कनका के कनकरत्ना तथा का उरति जानहि
विनीलेन । एव मेला पर मरैत में का काय हुँका मरक केन कनकरत्ना कहै

[illegible]

किमुक्तोक्त आग्रह से शक्तिवैद्य महर्षि स्तंभकार का प्रसन्नतापूर्वक आकरा सँग
विचार कर अपने मन्दगन्धक कपी प्रगति का हर दृष्टापी राजनिरिक से छोड़कर
हृदि भिन्न स्वच्छन्द मष्ट धनष्ट जगताह। का क ह शक्तिवैद्य महर्षिभिरिक
वैद्यवैद्यमन्त्र शौचव्युत्तराव नष्टि सेड कर्तागत वाक्यव में नंदन ने मन्त्र मष्ट
नन्ताह ने पुनका धाम्प उदम्भरुफ स्तरवा नष्टि रदनेह। पम्भुल तकापी स्वार्थ
होत हा का शक्ति, प्रसन्न हा का वाक्यव मुक्त का मन्त्र पुनका क मनगगी युक्त
पदेह।

‘अङ्गुलीक मग धर्मे नरा’ का तात्पर्य है कि किंवदन्त सत्य ‘धर्म’ मूल्य।
ऐक्यित मन्त्रक मूल पर ‘अङ्गुलीक मग धर्म’ के अर्थ में पाला-पाल कर रहल पाला
हि धर्म अन्तर्गत अपन मग पर गो धर्म एतने पद नगदत्त के बाहुन रहल
किन्तु नगदत्त मग में अन्तर्गत किन्तु नगदत्त के पद नगदत्त के बाहुन रहल
मगधर्म मगधर्म के अङ्गुलीक मगधर्म के अङ्गुलीक मगधर्म के अङ्गुलीक मगधर्म
मगधर्म

[illegible]

किमुमर्त्यक एहि लक्षण उद्दिष्ट मनन से मुनि शक्तिवैज शम्भुभक्त। पूरक
मुखमनि ह—दे प्रिये—अरु के श्री लक्ष्मी अरु के लक्ष्मी निशान कृष्ण में अन्ध
मेकही के लक्ष्मी कृष्णान्त हमरा कहूँ ।

१० कइवक निजाना ॥ ३॥ एतेकवक ॥ अ-यक पाम्मगुरुक निम्नमो
मालीह— हे नाथ, एहि होय स अहं के एक इतर कनी केहो हं पणोह क
समय पावि गये भासा कउतह । गनक स उर कान पुरमा पर कही के आकर गन
पाहि गनक मेनी के सावि होय देखए गइत । अगो अहि कहै एहि भुकर
कर्म के अइव कइवक ।

राशिरोषक भद्रपक्षमशुभ कृत्तक के शुनि इक्षित भए छा भवति-॥६॥
पुरुष भद्र । इक्षित पेश भ नैविक्रम नागक एव राख। लक्षि । इस पुनके कन्या
क्षिप्रुत्वा विकट । हमरा पुन धन ई लक्षि देव इत्य कए एतए कन्यक काछ
छो पति भद्रपक्ष देव मुगरक रूप करि कण्डू बाहर सेत छुन के छाहत भए अपन
मास उपगलक । काउएव पुन कीतए हो पकाए एतए अपनहु काछ । यत्न
अहाँ हमरा अपन परिचय देवाक कए कह ॥

स्वभाव से उच्चतर धर्म ही है जिस से वे मुक्त होकर भाग्यवश कांति ले-
 सकते हैं। पुरुषार्थ के चतुर्मास उपायसंग्रह प्रकाशित केन्द्रित विचारों के अन्तर्गत
 उपाय है। शक्तिदेव अत्यन्त शक्तिशाली हैं। वे कहते हैं— “हं शक्तिः” इस एक
 वाक्य में ही हमारे अन्दर शक्ति है। यदि हमें शक्ति मिले तो हमें वे शक्ति देव
 हमें शक्ति दे देंगे। शक्ति देव ही हैं। शक्ति देव ही हैं। शक्ति देव ही हैं। शक्ति देव ही हैं।

शक्तिशैलक वसनं विन्दुस्त्रयाद रम्यं हृत्तरं न चान्यथा मन्त्रैश्च कायस्थक ।
 कारो-कारो यदा मे पुनः यममण्डलं ददौ जन्मान् रानिपुणं क्षीयन् नन इह प्रतीतं
 ददौ । विन्दुस्त्रया श्रेयस्तिष्ठ मुमनश्च प्रपन्न एव पुरिषाक सञ्जनामन सञ्जि-
 कं भारमाकस्य लोदनिश्चितमह मे शक्तिदत्त मे शक्त्यः 'न कोर' आ मे ए शक्ति-
 दत्तः इत्युक्त्वा तन्मयं कनकक रत्नाणि श्रीं हृत्तरं कायस्थक समारम्भं नहि कान्तक ।
 शतशः शक्त्यः न एहि शोहर मनशान्ति यः शक्तः हृत्तरं यममण्डलं धिरेतु ॥ ११

शक्तिदेव विन्दुरम्भा मे कथयन् पृथु कानि दिव्यमयीः कं मौर्वि देल न्या
दिव्यमयीः पद्ममयं मे कं विन्दुरम्भा कं गेन तेन विद्या कालेन्य

एवंतर्गे सरस्वती एवं स्वर्गादित इव एव गुण इव चागति एवमन गुरु
पन्नाद्व तमा अतिवैव गुण मे मे ते. तदिन द.प.द एव द.प. मे गुण मे गु.प.
कानं स्वर्ग एव. तदिन द.प.द एव द.प. मे गुण मे गु.प.

किन्तु निम्नक स्तरान्त विन्दुगणना गणनाय मगर गैलॉस । दण्ड-मापक
काष्ठम माप धुरि गैल : अक्षरार्थ विन्दुगणनी मुक्तकक समस्त जय कदम्-
विन्दुगणन क गणक काष्ठम मान मण गैल , धनपत्र पद अथवा अलिशक
पालाथ अक्षर मम काष्ठ गणक नैमा के लए जानु”

[illegible]

धिनन्त सैंड कागज धर जो पुन। उद्दिान मर कांठर सैंड दगावस्यवध हेतु उदय मर सैलाह ।

विन्दुमेला शक्तिदेव के उद्दिान देवि सान्त्वना दैत कायन्त स्नेहपूर्ण वचन— 'हे शशी दय करोत छी के सिद्धगती कर' के वचन हमर मन पाकि गर्भक लेना के जनबाक हेतु पड़ोचै-इ जाइ । अइ एहि काय के बिना कोना तारतम्य के कारण पूरा कर जाइ सैंड मरीक मरिअक प्रति इच्छा एहि से माने इ करीब नहि छैक । हे शशी एहि धर्मक धरम कर के वैषदल नामक एक साधकक कथा कहैत छी—

वैषदलक कथा

'प्रार्थन काल मे कथक नामक ठगर ने हाथन नामक एक जायग छलाह हुनका ई ठगर नामक एक पुत्र छल य-इ । ई ठगर विद्वान मरिअ मन उग्रक समझे छलाह । एक बार जे उग्र ने काय सन्त धन के हाकि अन्त मे पक्षपाति करि गलाह । धर्मपूजाक कां करि हुनका एहि ठगर मरिअ के धर्म विचारक रूप एहि जायगक छि । योकाहु एहि मरिअ के दैन सपना जात प्रकारक जन सन्तक मरिअ जायग नामक मरिअ दखला से लयावा मे मान जाइ रहैत छलाह ।

इसल एहि नामक मरिअ जाय हुनका प्रमाण कयल-इ । तबनो ई ठगर के कह जात लकार मरिअ नामक विद्व कथक उद्दिान कां दगावक एहि परिवार के धर्म मे गलत-इ । ई ठगर एहि लकार के कारण जनक कायपाल बुनान के नुगीअ-इ ।

वैषदलक हुनका ए नामक कायन्त स्नेहपूर्ण वचन-इ 'हे पुन ! रघुवरक दग दुखी जनकल एहि समय एक मुक अलि मे से अइ इकर कयनानुसार काय करी है हम एहि क मरिअक धरम एहि मुक के कहल तथा एहि दय काय के कायल धर पाकर के-इ ।'

उपरीक एहि लकार स्नेहपूर्ण कथा के छनि ददलक एक प्रमाण दलाह जो कायन्त कायन्तपूर्णक मरिअक कयक के लीला कयल-इ तम आ काय-इ एहि मरिअ ।

एकमे 'आलपाक लयक मे रहैत वैषदलक कयक दितर जायल । एक दिन लयक-इ एहि मे लयक-इ आ एहि लयक नीचा कर एव लयक सैंड पुन कयल-इ तथा एहि लयक के प्रत्येक दिका मे केकेत बयसाह—'हे वैषदल' अइ के एहि लयक पुन कयक तथा पुनक उद्दिान एहि लयक हे लयक-इ एहि पुन के मरिअ कय ।'

एहि तरहेँ तपस्वीक आवेशानुसार देवदत्त प्रत्येक रात्रि केँ छोदि बटपूषक समीप जाए विधिपूर्वक पूजा करए लगलाह । एक दिन पूजाक उपरान्त ओहि बटपूषक सँ एक दिव्य हथी बाहर मए देवदत्त सँ कवल छै—^{१६} 'हे महाभाग ! इयर तलिकहिन अइ केँ बजबैत छवि ।'

एहि तरहेँ कहि ओ देवदत्त केँ छादि बटपूषक शोधरिक अन्दर जाए गेलह ओहि शोधरिक अन्दर जाए देवदत्त मयि निर्मित एक विलक्षण दिव्य मयन केँ देखलपिन। सकल मयम रत्नक पलंग पर बैसल अपन अपूर्व दाहि सँ ओहि मयन केँ आलोकित करैत एक नितान्त सुन्दरि स्त्री छलीह ।

देवदत्त केँ देखित हँ अलकार क अलङ्कृत पद सपन दुलसन कागज भंग केँ प्रदर्शित करैत ओ सुन्दरि तपस्वी केँ अभिवादन करैत स्नेहानुर मए बजलीह—^{१७} 'हे पुष्य भूष ! हम राजनय न भूक बटपूषक गुणो नानुभवधः धिकरू आलोकक आराधना से प्रसन्न भए हम हुनका अहं सदि दण कृतार्थ करबैत सुनि अइ केँ आराधनह ।' तब हम तईन मुख छी छै अइ केँ हम अपन प्राण हुँ तक न्योदायर कर पर आराधन देवार । माय अइ केँ हुनकर सँ विदाइ कए लिख ।'

विष्णुप्रभाक १२ गण ज्ञानगय पर देवदत्त संनिहित भए ओकर कथन मानि कति ज्ञान-तपुवक आनिह बए लगलाह । तबुन अत्यन्त पुष्य पर ललित कलशक गंधर्व अलंकार से अलंकृत एए भावक नेमक कलाश्रय अइ एहेसु आ नृत्यले जापन मय अंगनयन एए अलङ्कृत गण ओ बितरि हमर जन गौरव गकल्लक सा मे ते जा पर रूप पाय न कबि जाइल ।

एवंबल देवदत्त किन दिन भरि आनन्दपूवक आनंद स्मृतीक कवलह विष्णुप्रभा सँ गमयन मग गेलह । तबुन देवदत्त अपन गुण आलोकक अंतर्गत अहि मयानुर मए गम कृतान्त हुनकर केँ कवललिन ।

देवदत्तक कृतान्त सुनि तपस्वी दुनक कायक समर्थन करैत बजलीह—^{१८} 'हे भद्र ! अइ केँ किछु कथन से गम मगग सुन सुन कबि अइ हुनकर आका मानि ओकर गम केँ काहि गमक नेन। ते आनि हुनकर सम्पद कथ दिख ।

तपस्वीक आवेशानुसार देवदत्त पुन आ उपर गलाह मुदा विष्णुप्रभाक स्नेह कथन पर अपन भास पुष्य स्नेहानुर चेल। गन्त। ओ एहि दुष्कर्म केँ कथन से समर्थन मए विष्णुप्रभाक समर्थन उपपकार अहि रहलह । देवदत्तक आनन्दजन सँ अलग मए पद हुनका चिन्त। ते आतर आनि विष्णुप्रभा स्वतः पति उल्लाह ।^{१९} 'हे भद्र ! हम अरैत छी ते आलोक अइ केँ इयर गम पति क गमक नेन केँ अलंकार आदेश देखैत कबि । अइ तपस्वीक आवेशानुसार क न अदभ्य कक अत्यन्त। हम स्वयं आदिना केँ कए गइल छी । एहि स्वेँ विष्णुप्रभा

आत्मोत्कर्ष में इस प्रलय ली। अतः हम स्वयं कहीं के विद्याभरक राज्यक लेन एहि आतिथ समस्त विद्या के प्रदान करैत ली।”

एहि तरहें पार्वती देवदत्त के विद्याभरक समस्त विद्या एवं राज्य हम जन्त-
जीन मए मेज्जीह तथा देवदत्त विद्याभरक राज्य प्राप्त कए सुखपूर्वक निधुन्यमाक
सब रहए लगलह।”

मधुरमागिणी विन्दुरेखा एहि तरहें अपन स्वामी के परामर्श दैत मुनि कहए
लगलीह—“हे नाथ! कलम कीन कार्यक कीन कल प्राप्त होएत से ईश्वरकेछा पर
निर्भर रहैत। अतएव विन्दुमतीक इच्छानुसार हमर सर्व काहि सम्यक सेवा के
हए जाउ।”

मुनि विन्दुरेखाक कहनह पर जलन शक्तिदेव कीकर सर्व काकबाक हेतु उत्तर
नहि मेलाह तँउ काकबाकही भेल “हे शक्तिदेव! कहीं बिना कोनो तात्पर्य
कएने ओकरा सम्य के काहि सम्यक सेवाकेँ मए विन्दुमती केँ हए दिखौक। सम्यक
सेवा के मुझे सँउ पकड़ला पर को लहए बनि जाएत।”

एहि दिवस बायी के मुनि शक्तिदेव विन्दुरेखाक सम्य केँ काहि सम्यक
सेवाक मगरनि जलनहि पकड़लैत कि विन्दुरेखा तँ लहएदे दिवस को पारह कए
अद्वय मए मेज्जीह और सम्यक सेवा कएन कीन हुनक हान से कएएत कि कोनो
विद्याभर बनि गेलाह।

शक्तिदेव एहि वृत्तान्त केँ अपन रहित ओ विन्दुमती केँ विरहित मए
कहलबिन्द।

विन्दुमती जलन स्वयंप्रसादन करैत अत्यन्त स्निहपूर्वक अपन स्वामी शक्ति-
देव सँउ कहलीह—“हे नाथ! हमरा लोकनि विद्याभर राजाक कन्या तीनू लहएदे
बहिन निकटु के भाषक कएलै कमकपुत्री सँउ पतिव। मए सर्वलोक मे उत्पन्न भेलहुँ।
हमर एक बहिन कमकदेला सबसब मगर मे राजा करौणकारीक कम्पाकय मे जन्म
कए राजकन्या भेलहुँ अकर भाषक अन्त मए कहीं देखल। दोसर बहिन विन्दु-
रेखा पिछीह अकर मुनि सँउ लहएलै भेल कहि तथा हम तेसर बहिन निकटु।
काम हमरो भाषक सँउ मए भेल। हमहुँ काम जलन शिव नगरीक बाबा कए
खल ली। हमरा लोकनि स्नेह बहिन चन्द्रप्रभा कोनहि छुपि। काम कई
कहल-शिविक प्रमाण सँउ कोनए खल तथा हमरा काम बहिन सँउ विधिवत् रिवाज
कए जनकपुत्रीक राज्य महल कए। हे स्वामी! विद्याभर-आतिथ लोक मे सँउ
हलिक सेवा कामक आ मे कामक सेवा कमक ल्या करैत। ओ लोकनि माए उदैएन
भूचिक निमित्त काम एवं कमक सेवन करैत कहि।”

रुद्रि तारे" आपन कालविक्रि स्थिति कहनिहारि विन्दुमयी तैयारि शक्तिदेव
काकात मार्ग में कनकपुरी गेलाइ ।

शक्तिदेव के कनकपुरी काविरहि विन्दुमयी करवन्त ननु भय करल
"हे नाथ कहाँ तनयवध तैयार मंत्रिजगत् तैयार कोठरी में कमरा। मनेस कए हमर तिनू
बहिन के पुनः जीवन प्रदान करिऔइ ।" तदनुसार श्री बलनहि तैयार मंत्रिजगत्
पथस कोठरी में प्रवेश कएलाइ कि रत्नक आसन पारक निर्जीव शरीर ते कनकरेखा
कसीइ पुनि तबीब भए पुनः प्रणाम करैत कहवन्त स्नेह में कहल—“हे नाथ !
हमरहि काविर कहाँ पगल बरि कएलहु ।” बलनहि श्री योगर एवं तैयार कोठरी
तय्य जाए ननु निर्जीव शरीर के पुनि तबीब कएल ते ननु पुनः पूर्वक पगल
विन्दुमयी एवं विन्दुमयी कसीइ ।

तदनुसार श्री पुनः लोचनिक योग बहिन कन्दमयाक भवन में गेलाइ ते
रत्नकीय कन्दया एवं मरुतिज पट्टिकक अजीवनाशन कनोरम एवं स्वर्णकनकलवन
इतिगण्य सुवभाषण में कहलहु कनकीय सोभा के धारण कए पट्टिकलवनक
उत्कर्षण में उन्मत्त भए आपन नेत्रक भ्रष्टि के तप का लोचनार्थ ऊपर नीची
कए रहल कसीइ ।

शक्तिदेव के देखिऔइ कन्दमयाक कल्पवृक्षस्य रूप के कालीक मेलाइ
अधिर्यादिक सुल सुयंक किरक एवं सादरि में कमलसन निवसित भए आपन
पारक मोरम के स्वच्छन्दतापूर्वक प्रसारित कए लागल ।

कन्दमया पुनः भरे शक्तिदेवक आदर सत्कार कएलाइ उपरान्त आत्यन्त
लोग्य भए कहल—“हे नाथ ! निद्रिक लीला यिनिक होइछ । मीम ने मधुसूदन
प्रेमहु में विद्रुह मिथल रहीछ । कलुषा विरहे श्री धूल पदार्थ पिक सादि में अम-
रन्तक गुण वर्तमान रहीछ तथा साहि देत प्रेमक कायिमाँच होइछ । प्रेमक गाला
में आपना के हथ केनिहारक तुल्य कनकवि भवर्ष नहि मए गकेछ । लीलाक दाना
फलक गहनस में में केन केनहु आइछ में और रूप सुयमित तेल कनि मकट
होइछ । हे लीलापरासी ! कहाँ ते वर्तमान नगर में कनकरेखा नामक रामकुमारी
देखने सुलिके श्री कन्दरेखा उरगत होयक कोर कन्या विन्दुमयी शक्तिरेखा तथा
विन्दुरेखा हमर बहिन शक्तिप्रसा विनीइ । काव कहाँ हमरा लोचनिक संग हमर
निवासीक समष्टि जाए विधिवत् विवाह कए विद्याधर लोकक राज्य कर ।”

तदनुसार शक्तिदेव चाक इतिनिक संग विद्याधर राजा शक्तिप्रसाक श्रोतए
गेलाइ तथा आपन विद्यवानु लोचनिक संग पुनः सादर प्रणाम कएलनिहु ।

शक्तिदेवक पुनः लोचनिक विद्याधरक राजा प्रभु भए विविक्त आपन चाक
पुत्रीक संग पुनः विवाह कए देल तथा विद्याधरक समस्त निवास संग कनकपुरीक
राज्य एव शक्तिदेव नाम रात्रि अत्यधिक आदर सत्कार कए कहल “हे पुन ! कहाँ

विद्याभर काशिक राज्य ताबत धरि कस्य ताबत बलराज उदयनक पुत्र नयसाइनदल राज्य कलेश योग्य माए कैलाद । सो खहाँ लोकनिह सकपली रुखा होएलाह ।^{११}

एवहिमे शक्तिदेव केँ सो सोखए तैंऽ अपन जाक कलमाक लेग पुनि कनक-पुत्री केँ प्रसागमन करमाओल ।

शक्तिदेव विद्याभरपिन भए अत्यन्त गर्वपूर्वक ताझात् लपनीउन स्वरुमवली अपन जाक प्रियतमाक लेग कनकपुरीक राज्य करए लगलाह ।

हे कल्यार्थदा-भूयदा गुरुगुरु ! एहि तरहेँ मनुष्य भेलहुँ हम भगवान् होकरक प्रसादात् विद्याभर बनि विद्याभरक राज्य प्राप्त कएल तथा अपन माँरी पछा-टक दर्शन कए पुनि अपन लोक केँ जाए रहल छी । भगवान् आर्हिक छवत् मंगल करवि ।^{१२}

निदग्धवकासि कोमाण मन नैराशमुग्रमः ।

किन्तु नानाकथा-जात-स्मृति-लोकादे-सिद्धये ॥

— प्रथम सन्धक, प्रस्तावना ।

लेखक अन्य कृत

१. महाकवि विश्वनाथ नाटक—विद्यापतिक जीवन पर आधारित सरल भाषा सुसज्जित भाव एवं लक्ष्यपूर्ण कथनोपपन्नक सापूर्व मैथिलीक नाटक । मूल्य १) टाका मात्र ।
२. अन्धरीबाई नाटक—अष्टाक्षरकुलीदेव रामा मोहन सिंह जी परनाथ सायक रसनागदग सुलक सभ्य भेज मुख पर आधारित राष्ट्रीय भावना, औद्योगिक भाषा एवं लक्ष्य साहित्य में मैथिलीक नाटक । मूल्य १) टाका मात्र ।
३. शास्त्रार्थ नाटक—शेकराबाई, महाकविभिन्न एवं भारतीय सभ्य भेज शास्त्रार्थ पर आधारित राष्ट्रीय लक्ष्य के लक्ष्य को प्रतीकक रूप में प्रतिपादित मैथिलीक नाटक । मूल्य १) टाका ५- वैसा मात्र ।
४. ब्रह्मचरिणी—विद्या, नाटक एवं कथापरिभाषा के लक्ष्य साहित्य सायक मोह विद्यापति जी अत्यन्त रोचक मैथिली कथाक लक्ष्य । मूल्य २) टाका मात्र ।

पुस्तक प्राप्ति कथा

ग्रन्थालय,

टाका चौक, दरभंगा

एवं

श्री अमरनाथ सा

द्वारा—विद्यापति चौक, बरना-२